तेरे बरसाने वस्सन दा चा

तेरे बरसाने वस्सन दा चा

तेरे बरसाने वस्सन दा चा, बरसाने रहन वालिए
मैनू देदे चरणां च थोड़ी थां, बरसाने रहन वालिए

1. सुनिया ए गहवरवन पैंदी रास ए
मोरकुटी च ब्रज संतां दा वास ए
साडा नित दा मिलन करा,
बरसाने रहन--------

2. सुनिया ए महल तेरा ऊंची अटारी ए
पौड़ी पौड़ी चढ़ी जांदी दुनिया एह सारी ए
कदी सानू वी दर ते बुला,
बरसाने रहन---

3. धामां चो धाम तेरा सुंदर धाम ए
जिन्ना सोहना धाम तेरा ओना सोहना नाम ए
नाम रस किते सानू वी पिला,
बरसाने रहन----

4. मंगला करण सब ब्रजवासी आंदे ने
लाडली लाल दा दर्शन पांदे ने
कर "मधुप" दा पूरा चा,
बरसाने रहन---

कवि : सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण 'मधुप' (मधुप हरि जी महाराज) अमृतसर (9814668946)
स्वर : सर्व मोहन (टीनू सिंह)

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/33858/title/tere-barsane-wassan-da-cha

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |